स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: आधुनिक भारत के प्रेरणा स्रोत

Name - Kirti Kumari

Supervisor- Prof.(Dr.) Rathod Duryodhan Devisingh

Department of arts

Institute name - Malwanchal University, Indore

सार

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का महत्वपूर्ण योगदान किया और उन्होंने आधुनिक भारत के प्रेरणा स्रोत के रूप में काम किया। उन्होंने भारतीय समाज को जागरूक किया और उनका संदेश युवाओं के बीच बहुत प्रभावशाली रूप से पहुंचा। स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उनकी आत्मा के महत्व को प्रमोट करता था, जिसमें भारतीय संस्कृति और धर्म का महत्वपूर्ण भाग है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विश्व में प्रस्तुत करने का संकल्प लिया और भारतीय तात्त्विकता को मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत माना। स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक दृष्टिकोण में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्होंने भारतीय समृद्धि और सांस्कृतिक विकास के लिए संकल्प जताया। उनका संदेश आज भी हमारे देश के युवाओं के बीच उत्साह और प्रेरणा का स्रोत है और उनके द्वारा दिए गए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने भारत को आधुनिक दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंचाया है।

परिचय

स्वामी विवेकानंद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख दार्शनिक और योगी थे, जिन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत के प्रेरणा स्रोत के रूप में माना जाता है, जिसने भारतीय समाज को सशक्त और समृद्धि की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति, धर्म, और दर्शन के महत्व को प्रमोट करता था। उन्होंने भारतीय समृद्धि के लिए भारतीय तात्त्विकता का महत्व स्थापित किया और इसे मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया। उनका दृष्टिकोण था कि भारत का आदिकाल से ही एक विशेष धार्मिक और दर्शनिक परंपरा रहा है, जो दुनिया को आध्यात्मिकता और मानवता के महत्व की ओर मोड़ सकती है।स्वामी विवेकानंद ने युवा पीढ़ियों को उनके स्वाभाविक पोषण करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें उनकी संस्कृति और धर्म के प्रति गर्व महसूस करने की बजाय उन्हें आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विश्व स्तर पर मुकाबला करने की प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक दृष्टिकोण में सुधारने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्होंने भारतीय समृद्धि और सांस्कृतिक विकास के लिए संकल्प जताया। उनका संदेश आज भी हमारे देश के युवाओं के बीच उत्साह और प्रेरणा का स्रोत है और उनके द्वारा दिए गए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने भारत को आधुनिक दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंचाया है।

भारतीय राष्ट्रवाद: सांस्कृतिक उत्थान

भारतीय राष्ट्रवाद एक महत्वपूर्ण विचारधारा है जो भारतीय समाज और संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है। यह विचारधारा भारतीय सांस्कृतिक उत्थान को समझने और प्रमोट करने का प्रयास करती है, जिसमें संस्कृति, भाषा, धर्म, और ऐतिहासिक धरोहर का महत्व बताया जाता है। इस विचारधारा के अनुसार, भारत एक विशेष और अद्वितीय सांस्कृतिक धरोहर के धनी है और इसका सर्वश्रेष्ठ रूप में संरक्षण करना चाहिए। सांस्कृतिक उत्थान का हिस्सा भाषा है, और इसीलिए संस्कृत को महत्वपूर्ण भाषा माना जाता है। संस्कृत भाषा का सर्वोत्तम भाषा के रूप में मानने का प्रयास किया जाता है, और इसका अध्ययन और प्रचारण किया जाता है। संस्कृत के माध्यम से ही भारतीय धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जा सकता है और उनका गहरा समझाया जा सकता है। भारतीय राष्ट्रवाद के तहत सांस्कृतिक उत्थान का महत्वपूर्ण हिस्सा है धर्म। भारत में अनेक धर्म हैं, जैसे कि हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, इस्लाम, और ख्रिस्ती धर्म, और यह सभी धर्म भारतीय समाज के अद्वितीय पहलुओं को प्रकट करते हैं। इन धर्मों के अध्ययन और प्रचारण के माध्यम से भारतीय समाज को धार्मिक और मॉरल मूल्यों का समझाया जाता है। भारतीय राष्ट्रवाद के तहत सांस्कृतिक उत्थान का अर्थ यह भी है कि भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण किया जाना चाहिए। भारतीय कला, संगीत, नृत्य, और वास्तुकला का महत्व बढ़ाया जाता है जिससे भारतीय संस्कृति की अद्वितीयता को प्रमोट किया जा सकता है। इस तरह से, भारतीय राष्ट्रवाद सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करता है और भारतीय समाज को अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गर्व महसूस करने में मदद करता है। इसके माध्यम से भारतीय समाज अपनी भूमिका को समझता है और अपने सांस्कृतिक धन को संरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध रहता है।

राष्ट्र और राष्ट्रवाद का विचार

राष्ट्र और राष्ट्रवाद मानव इतिहास में महत्वपूर्ण और गहरे विचारों का हिस्सा रहे हैं। राष्ट्र एक सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है जो एक समृद्धि और सामाजिक संगठन के रूप में व्यक्त होता है, जबकि राष्ट्रवाद एक दृष्टिकोण या विचारधारा है जो राष्ट्र के स्वाधीनता, सुरक्षा, और आत्म-प्रशंसा का प्रमोट करती है।

राष्ट्र का अर्थ एक समृद्धि और एकता के संगठन का है, जिसमें एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में बसे लोग एक साथ रहते हैं और एक सामाजिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संरचना द्वारा जुड़े होते हैं। राष्ट्र अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, और इतिहास के माध्यम से अपनी विशेषता को प्रकट करता है और उसकी पहचान बनाता है। राष्ट्र का महत्वपूर्ण हिस्सा उसकी संविधानिक और सियासी संरचना होती है, जो लोगों के अधिकारों और कर्तव्यों को मान्यता देती है।

राष्ट्रवाद एक दृष्टिकोण है जो राष्ट्र के महत्व को प्रमोट करता है और उसकी सुरक्षा और स्वतंत्रता की रक्षा करने का प्रयास करता है। यह दृष्टिकोण राष्ट्र के आत्म-सम्मान को बढ़ावा देता है और उसके अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करता है। राष्ट्रवाद के तहत, राष्ट्र के लोगों को अपनी स्वतंत्रता की मूल्यांकना करने का अधिकार होता है और उन्हें अपने विकास की दिशा में स्वतंत्रता और उत्थान की सजीव प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए।

राष्ट्रवाद का विचार विश्व के अनेक देशों में महत्वपूर्ण है, और यह राष्ट्र के स्वतंत्रता, एकता, और विकास के माध्यम से उनकी पहचान को मजबूत बनाता है। यह एक सामाजिक संरचना और समरसता की दिशा में लोगों को जोड़ता है, और उन्हें एक साथ काम करने और साझा कार्य करने का मौका देता है। इसके माध्यम से राष्ट्र का विकास होता है और वह अपने समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

समर्थकों के अनुसार, राष्ट्र और राष्ट्रवाद विकास, सुरक्षा, और सामर्थ्य की दिशा में महत्वपूर्ण और अपरिहार्य हैं, जो समाज के सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठान को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। राष्ट्र के महत्व को समझने और राष्ट्रवाद के माध्यम से उसे सुरक्षित और समृद्ध करने का मौका देने से ही समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

स्वामी विवेकानंद के द्वारा आधुनिक भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक अध्ययन करने की आवश्यकता उनके विचारों और कार्य के महत्व को समझने के लिए है। यह अध्ययन हमें उनके सोच और दृष्टिकोण की समझ में मदद करेगा जो आधुनिक भारत के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

1. **आधुनिकता और धार्मिकता का संयोजन:** स्वामी विवेकानंद ने आधुनिकता और धार्मिकता के संयोजन को प्रमोट किया। उन्होंने दिखाया कि आधुनिक भारत सांस्कृतिक धर्म के माध्यम से अपनी एकता और अद्भुतता को बनाए रख सकता है।
2. **राष्ट्रीय एकता के प्रति प्रेरणा:** स्वामी विवेकानंद के विचार ने भारतीय समाज को एकता और सांस्कृतिक गरिमा के माध्यम से एक साथ आने के लिए प्रेरित किया।
3. **धर्मिक सहमति की महत्वपूर्ण भूमिका:** विवेकानंद के द्वारा धर्मिक सहमति के महत्व को पुनरावलोकन किया गया। उन्होंने दिखाया कि विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक साथ रहकर समृद्धि की ओर बढ़ सकते हैं।
4. **योग और ध्यान का महत्व:** स्वामी विवेकानंद ने योग और ध्यान को आध्यात्मिक और मानसिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण उपाय के रूप में प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से वे लोगों को अपने स्वार्थ के बजाय समृद्धि और सेवा के लिए उत्साहित करते थे।

इस अध्ययन के माध्यम से हम स्वामी विवेकानंद के विचारों का सही समझ सकते हैं और उनके द्वारा प्रमोट किए गए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के महत्व को समझ सकते हैं जो आधुनिक भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मेधनंदा, स्वामी (2020) पिछले कई दशकों में, कई विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि स्वामी विवेकानंद सभी धर्मों के सद्भाव के प्रचारक के रूप में थे, लेकिन उन्हें हिंदू श्रेष्ठतावाद के आरोपों का सामना करना पड़ा। ज्योतिर्मय शर्मा ने अपनी पुस्तक "ए रिस्टेटमेंट ऑफ रिलिजन: स्वामी विवेकानंद एंड द मेकिंग ऑफ हिंदू नेशनलिज्म" (2013) में उनकी विचारधारा का परीक्षण किया है। शर्मा के अनुसार, विवेकानंद "हिंदूत्व के पिता और गुरु" थे, और वे हिंदू एकाधिकारवाद के प्रति समर्थन दिखाते थे, जिन्होंने मौजूदा जाति व्यवस्था को आलोचना की, गैर-हिंदू धर्मों को नकारा दिया और अपने गुरु श्री रामकृष्ण की अधिक उदार और समतावादी दृष्टिकोण से भिन्न थे। इस लेख के दो मुख्य उद्देश्य हैं। सबसे पहले, मैं शर्मा की पुस्तक के केंद्रीय तर्कों की आलोचनात्मक जांच करता हूं और उनकी कार्यप्रणाली और विवेकानंद के काम की उनकी विशिष्ट दुर्बलियों की पहचान करता हूं। दूसरा, मैं हिंदू धर्म, धार्मिक विविधता, जाति व्यवस्था और रामकृष्ण के सिद्धांतों पर विवेकानंद के विचारों के प्रक्षिप्त दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूं। मेरा तर्क है कि विवेकानंद एक हिंदू श्रेष्ठतावादी नहीं थे, बल्कि वे एक महान देशभक्त थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आध्यात्मिक नींव तैयार करने का प्रयास किया, वंशानुगत जाति व्यवस्था की तीखी आलोचना की, और बहुलवादी सिद्धांत का समर्थन करने में रामकृष्ण का अनुसरण किया कि विभिन्न धर्म समान रूप से मोक्ष की ओर ले जाने में सक्षम हैं।

प्रसाद, उमाकांत (2019) स्वामी विवेकानंद भारत के एक महान विचारक और समाज सुधारक थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वह एक महान शिक्षाविद्, व्यावहारिक, आदर्शवादी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के समर्थक, प्रकृतिवादी, दूरदर्शी, दार्शनिक और सबसे ऊपर मानवता के उपासक थे। स्वामी विवेकानंद भारतीय लोगों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक इतिहास में एक अग्रणी व्यक्ति हैं। शिक्षा का उनका दूरगामी विचार समय के साथ दुनिया भर में विचारशील लोगों की बढ़ती संख्या को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने सत्य, वेदांत, मनुष्यों की बंधुता, मानवता की एकता, धर्मों की सर्वसम्मति और भौतिकवाद पर आध्यात्मिकता की सर्वोच्चता का सार फैलाया। शिक्षा पर उनके विचार पारंपरिक भारतीय दर्शन में निहित हैं जो सद्भाव, करुणा, सहिष्णुता और शांति के आदर्शों को बढ़ावा देता है; जहां मानव निर्माण और चरित्र निर्माण मूल उद्देश्य हैं। सार्वभौमिक मूल्यों और सहिष्णुता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और समग्र रूप से मानवता के साथ उनकी सक्रिय पहचान, गरीबों और निराश्रितों के पक्ष में संघर्ष, गरीबी को कम करने और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव को खत्म करने के लिए, सामूहिक शिक्षा, शिक्षा के रूप में समाज सेवा, सामाजिक सुधार पर जोर, शारीरिक श्रम के लिए सम्मान, धर्म की व्यापक अवधारणा, ध्यान,

मौन और प्राणायाम पर जोर। शिक्षा के रूप में योग, आध्यात्मिक शिक्षक, पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान से उपयुक्त इनपुट के साथ भारतीय शिक्षा को परिष्कृत करना, अंतर्राष्ट्रीयता और अन्य देशों की संस्कृति की सराहना राष्ट्र और पूरे विश्व के सतत और समावेशी विकास के तरीके हैं। यह उल्लेखनीय है कि विवेकानंद के विचारों और कार्यों के बीच समानताएं हैं जो एक सदी से पहले हुई थीं और यूनेस्को की वर्तमान चिंताएं हैं।

पांड्याए समता। **(2019)** स्वामी विवेकानंद प्रभावशाली वेदांतवादी दार्शनिक विचारकों में से एक थे, जिन्होंने पहली बार भारत की सांस्कृतिक वैधता और ऐतिहासिक गौरव को दुनिया के बौद्धिक समुदायों तक पहुंचाया। एक भारतीय वेदांती होने के नाते, उन्होंने मनुष्यों के बीच सार्वभौमिक भाईचारे और धार्मिक सहिष्णुता की भावनाओं को बढ़ावा दिया और उन्हें विविधताओं को पकड़ने और उनकी सराहना करने के लिए प्रोत्साहित किया। वर्तमान अध्ययन विवेकानंद की दार्शनिक शिक्षाओं, शिक्षा पर उनके विचारों और विचारों को ध्यान में रखने का प्रयास करता है। इसमें उनके बुनियादी दार्शनिक सिद्धांत, महामारी विज्ञान, ऑन्कोलॉजी और एक्सियोलॉजी पर विचार और शिक्षा के दर्शन, शिक्षा की अवधारणा, इसके उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों, शिक्षण के तरीकों, शिक्षा के माध्यम, विषयों, शिक्षक-छात्रों के संबंध, पूर्व और पश्चिम के एकीकरण और धर्म और विज्ञान के सामंजस्यपूर्ण संश्लेषण पर उनके विचार शामिल हैं। यह एक पूर्वव्यापी अध्ययन है जो वर्णनात्मक-सह-विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार परम वास्तविकता और सत्य भगवान है और हर इंसान की आत्मा भगवान की है। मानव शरीर क्षय के अधीन है जबकि आत्मा परम, अमर और शाश्वत है।

मिश्र, विक्रांत (2019) स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है। विवेकानंद के जीवन के अनुभवों के माध्यम से, उन्होंने कई सत्य सीखे और उन्हें दूसरों के साथ साझा किया। इन सच्चाइयों ने शिक्षा के विषय को संबोधित किया। उनके लिए शिक्षा ने समाज में बुराइयों को ठीक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यह मानवता के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण है। उन्होंने "मानव-निर्माण" शिक्षा के बारे में बात की। भारत के लिए विवेकानंद की शैक्षिक योजना में, महिलाओं और जनता के उत्थान को सर्वोच्च प्राथमिकता मिली। इस पेपर में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन को समझाने की व्यवस्थित कोशिश की गई है।

देबनाथ, कुणाल (2018) भारतीय समाज सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से एक बहुचर्चित मुद्दे 'भारतीयता' से संबंधित बढ़ते संकट से गुजर रहा है। इस प्रतीक-केंद्रित शब्द

'भारतीयता' का अर्थ है भारतीय लोगों की एक अखंड विशेषता। विचार, क्रिया, व्यवहार, आंदोलन - सभी सभी भारतीयों को एक ही सांचे में आकार देने के लिए (इन) दृश्यमान आंखों के लेंस के नीचे हैं। लोकतंत्र स्वयं एक सामाजिक-राजनीतिक आदर्शवाद के रूप में प्रकट होता है जैसे कि इसे हर किसी द्वारा बरकरार रखा जाना चाहिए। इस तरह की आदर्शता के कारण कारणों की बहुलता सीमित हो रही है। इस समय, श्री रामकृष्ण, एक प्रसिद्ध लेकिन 'गैर-बौद्धिक' बंगाली किंवदंती का संदेश विचारोत्तेजक हो सकता है, जबकि 'भारतीयता' में कारणों की बहुलता का अभाव है। एक बार श्री रामकृष्ण ने कहा कि 'जातो मत तातो पथ'। उन्होंने मानव जाति को लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के बावजूद समावेशिता में विश्वास करना सिखाया। उनके विचार कारणों और व्यक्तिपरक वास्तविकता की बहुलता का समर्थन करते हैं जो वर्तमान भारतीय संदर्भ में समय की आवश्यकता है। इसलिए, यह पत्र वर्तमान भारत में श्री रामकृष्ण के संदेश की प्रासंगिकता को उजागर करने का इरादा रखता है।

पंड्या, समता (2014) यह लेख भारत के कन्याकुमारी में विवेकानंद केंद्र के साथ फील्ड वर्क पर आधारित है। विवेकानंद केंद्र **("केंद्र") 1972** में स्थापित एक हिंदू आध्यात्मिक संगठन है, जो स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रचारित सिद्धांतों पर आधारित है। संगठन के सदस्य विवेकानंद के वेदांत और योग के आदर्शों को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में परिवर्तित करते हैं। विवेकानंद के आदर्शों के प्रमुख ट्रांसमीटर के रूप में एकनाथ रानाडे के प्रयासों, उन्हें साकार करने के लिए उन्होंने जिस तरह से तपस्या, त्याग और सेवा को प्रभावी ढंग से प्रेरित किया, और समाज सेवा और इसके प्रभावों की केंद्र की रणनीति पर चर्चा की गई। विशेष रूप से, केंद्र की सामाजिक सेवा का विश्लेषण इसकी सामाजिक चेतना, सामाजिक मुद्दों और लिंग पर इसके विचारों, इसके हिंदू राष्ट्रवादी रुख और स्थापना और वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के साथ इसके संबंधों के आधार पर किया जाता है। यह आलोचनात्मक विमर्श पारंपरिक समाजवाद के विपरीत वेदांतिक समाजवाद पर केंद्र के जोर को उजागर करता है। जिन लेंसों से केंद्र समाज को देखता है, वे लैंगिक और जातीय राष्ट्रवादी हैं। यह एक उदार पितृसत्तात्मक सुविधाजनक बिंदु से न्याय, इक्विटी और राज्य संबंधों के मामलों से संबंधित है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत के प्रेरणा स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण था। उन्होंने भारतीय समाज को एक सशक्त और अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखा और उसे दुनिया के समाजों के साथ मेल करने की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति, धर्म, और दर्शन का महत्व बताया और उन्होंने इसे आधुनिकता के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने

योग और ध्यान के माध्यम से आत्मा के अद्वितीयता का महत्व बताया और मानवता के साथ आत्मा की सजीव जड़न की आवश्यकता को जगाया। उन्होंने भारतीय युवाओं को उनके स्वाभाविक कौशल और प्रकृति को पहचानने की दिशा में मार्गदर्शन किया और उन्हें आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बनने की प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत को अपनी धर्म, संस्कृति, और तात्त्विकता के साथ गर्व से दुनिया के सामने प्रस्तुत किया और भारतीय समृद्धि और सांस्कृतिक विकास के लिए संकल्प जताया। उनका संदेश आज भी हमारे देश के युवाओं के बीच उत्साह और प्रेरणा का स्रोत है और उनके द्वारा दिए गए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने भारत को आधुनिक दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंचाया है।

संदर्भ

1. अहमद, राजा। समकालीन भारत में हिंदू राष्ट्रवाद, मोदी फैक्टर और विचारधारा मैट्रिक्स। **XXIV. 44-53.**
2. - जुकेनेविसियस, स्टैनिस्लोवास। सभ्यताओं के बीच की खाई को पाटना: स्वामी विवेकानंद। संवाद और सार्वभौमिकता। **30. 175-186. 10.5840/du202030341.**
3. मेधनंदा, स्वामी। क्या स्वामी विवेकानंद हिंदू वर्चस्ववादी थे? लंबे समय से चली आ रही बहस पर फिर से विचार करना। धर्मों। **11. 368. 10.3390/rel11070368.**
4. प्रसाद, उमाकांत। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन: सतत विकास की दिशा में एक मार्ग।
5. सरिफ, एमडी **(2019)**। स्वामी विवेकानंद की दार्शनिक शिक्षाएं और शिक्षा पर उनके विचार।
6. मिश्रा, विक्रांत। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन। देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल। **3. 10-18. 10.36018/dsiij.v3i0.31.**
7. देबनाथ, कुणाल। श्री रामकृष्ण का संदेश और भारतीय समाज का पुनरावलोकन। एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल। **10.2139/ssrn.3823190.**
8. पांड्या, समता। भारत में विवेकानंद केंद्र: इसके वैचारिक अनुवाद और इसकी सामाजिक सेवा की आलोचना। धर्म पर महत्वपूर्ण अनुसंधान। **2. 116-133. 10.1177/2050303214534999.**
9. शर्मा, जे।। धर्म का एक पुनर्कथन: स्वामी विवेकानंद और हिंदू राष्ट्रवाद का निर्माण। धर्म का पुनर्कथन: स्वामी विवेकानंद और हिंदू राष्ट्रवाद का निर्माण। **1-300.**

10ए कुमार, एम प्रमोद और चौधरी, प्रोबल। स्वामी विवेकानंद और प्राचीन भारतीय सभ्यता। **10.13140/**आरजी.**2.1.4315.9285.**

11ए स्टोल्टे, कैरोलियन और फिशर-टाइन, हैराल्ड। भारत में एशिया की कल्पना: राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद **(**सीए **1905-1940)**। समाज और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन। **54. 10.1017/S0010417511000594.**

12ए चक्रवर्ती, चंद्रिमा। फिटनेस प्रशिक्षक के रूप में हिंदू तपस्वी: योग में विश्वास को पुनर्जीवित करना। खेल के इतिहास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. **24. 1172-1186. 10.1080/09523360701448307.**

13ए फुलर, क्रिस्टोफर एंड हैरिस, जॉन। वैश्वीकरण हिंदू धर्म: चेन्नई में एक 'पारंपरिक' गुरु और आधुनिक व्यापारी। **10.7135/UPO9781843313823.010.**